महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
Accredited with 'A' Grade by NAAC

'भगत सिंह की शहादत और महात्मा गांधी' विषय पर संगोष्ठी
गांधी विचार मंच का आयोजन

वर्धा दिनाक 26 मार्च 2013: महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के छात्रों की संस्था 'गाँधी विचार मंच' ने भगत सिंह की शहादत दिवस के अवसर पर 'भगत सिंह की शहादत और गाँधी जी' साध्य की सुचिता और साधनों का अंतर्द्वंद्व पर संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी में मुख्य वक्ता गुजरात विद्यापीठ की प्रोफेसर पुष्पा मोतियानी ने भगत सिंह को असाधारण देशभक्त और योद्धा बताया। उन्होंने भगत सिंह के लेखन और विचार शैली की व्याख्या करते की। उन्होने कहा कि भगत सिंह पर अकादमिक तरीके से काम करने की परम्परा हमारे विश्वविद्यालयों में नहीं है।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. चितरंजन मिश्र ने कहा कि आज हमारे स्वप्न छोटे हो गये है, इसीलिये हमारे विचार भी बौने है। भगत सिंह एक विराट स्वप्नदर्शी समय की उपज थे, इसलिये वे अपनी शहादत के इतने वर्षों बाद भी प्रासंगिक और वरेण्य हैं।

अहिंसा एवं शांति अध्ययन के विभागाध्यक्ष डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी ने भगत सिंह के साधन को भी पवित्र मानते हुए कहा कि उन्होंने बहरों को सुनाने के लिये असेंबली में बम फेका था, किसी की हत्या उनका उद्देश्य नहीं था। एक बलिदानी के तौर पर उनकी महत्ता अक्षुण्ण रहेगी।

साहित्य विद्यापीठ के प्रोफेसर सूरज पालिवाल ने भगत सिंह के पत्रों की चर्चा करते हुए उनके विनम्र किन्तु दृढ़ व्यक्तित्व छवि प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि भगत सिंह का विपुल लेखन और उस उम्र में उनकी बढ़ी हुई सोच आज भी हमें अचरज में डालती है।

समाज कार्य के प्रोफेसर और निदेशक प्रोफेसर मनोज कुमार के अनुसार यह सदी साधनों के चुनाव की सदी है और गाँधी जी तथा भगत सिंह के टकराव को छोड़कर हमें अपने समय के संकटों को समझने के लिये साध्य का चुनाव कर साधनों के विकल्प पर चर्चा करनी होगी।

सहायक प्रोफेसर डॉ. राकेश मिश्र ने भगत सिंह को भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का नया प्रस्ताव बिंदु मानते हुए कहा कि उन्होंने 'भारत माता की जय' के स्थान पर 'इन्कलाब जिंदाबाद' जैसा वैश्विक संदर्भ का जागरुक नारा दिया। उन्होंने भगत सिंह के हवाले से कहा कि नेता पीछे रह जाते है, जनता आगे बढ़ जाती हैं। और आज तक यह बात विश्व इतिहास के सबक के तौर पर हमारे सामने है।

संगोष्ठी में शोध छात्र संजीव झा 'मजदूर' तथा वेदान्त मिश्र ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन गाँधी विचार मंच के संयोजक नीरज कुमार ने किया तथा अरविंद उपाध्याय ने उपस्थितों का आभार माना। कार्यक्रम में डॉ. शोभा पालिवाल, डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. रवि कुमार, डॉ. श्रीनेकत मिश्र, डॉ. चित्रा माली, डॉ. रुपेश कुमार, सहित बड़ी संख्या में अध्यापक, छात्र और विश्वविद्यालय के कर्मचारी उपस्थित थे।